शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयक महात्मा गांधी

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनके विचार और कार्य पद्धति का पूरे देश में पुनरावलोकन किया गया। भारत के आजादी आंदोलन में गांधीजी के योगदान के कारण अभी तक उनका राजनीतिक पक्ष ही उभर कर सामने आता था, परंतु पहली बार उनके आध्यात्मिक पक्ष को समझने का प्रयास किया गया। पहली बार ऐसा हुआ जब गांधीजी की प्रासंगिकता को लेकर कोई प्रश्न नहीं किए गए। विकास की अंधी दौड़ में लगे देश भी इस बात को समझ रहे हैं कि गांधी विचार को अपनाये बिना दुनिया के सामने और कोई रास्ता नहीं है। हिंसा के सर्वोच्च शिखर पर बैठे इस संसार को बचाने की ताकत सिर्फ गांधी विचार में ही दिखायी दे रही है। महात्मा गांधी ने अपने आत्मबल से हिंसक शक्ति को परास्त किया। गांधीजी ने अपने अहिंसक सत्याग्रह के प्रयोग से इस बात को भलीभांति जान लिया था कि हिंसा तभी तक काम करती है जब तक उसके सामने कोई लक्ष्य होता है। अंग्रेजों के पास बंदूक थी, तब गांधीजी ने उसके मुकाबले चरखे को रखा। दो विश्वयुद्धों के बीच में अहिंसा और चरखे से आजादी हासिल करने की बात कोई महापुरुष ही कर सकता है। चरखे के आगे अंग्रेजों की बंदूकें कुंद हो गयीं। उनकी गोलियों का बारूद सूख गया। महात्मा गांधी ने अपने जीवनकाल में जितने आंदोलन किए, उसमें उन्होंने अंग्रेजों को बंदूक का उपयोग नहीं करने पर मजबूर किया। जलियावालां बाग हत्याकांड के बाद गांधीजी ने अंग्रेज सरकार के साथ अहिंसक असहयोग आंदोलन शुरू किया। विद्यार्थियों ने स्कूल-कॉलेज, वकीलों ने वकालत, डॉक्टरों ने अपनी डॉक्टरी छोड़ दी। चैरीचैरा की हिंसक घटना के बाद गांधीजी ने उपवास कर आंदोलन को वापस लिया। साथ में यह कहा कि देश अभी तैयार नहीं है। उन्होंने देश में व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं को दूर करने के लिए जनता को अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम दिए। इन रचनात्मक कार्यक्रमों से देशवासियों का खोया हुआ आत्मविश्वास जाग्रत हुआ। अंग्रेजों के नमक कानून के विरोध में गांधीजी ने दांडी मार्च किया। अंग्रेजों को इस बात की कल्पना ही नहीं थी कि चुटकीभर नमक से उनका साम्राज्य हिल जाने वाला था। इस समय भी अंग्रेजों की बंदूकें आग नहीं उगल पायीं। सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर जेल अवश्य भेजा गया। इसी समय स्वदेशी आंदोलन अपने पूरे उफान पर था, जिसने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने की भूमिका तैयार की। जब गांधीजी को लगा कि अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अहिंसक साधनों से आजादी हासिल करने के सिद्धांत को पूर्ण रूप से स्वीकार करने से इनकार कर दिया है, तब उन्होंने अपने को कांग्रेस से अलग कर लिया। इसके बाद उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रयोग किया। फिर वह दिन भी आया जब उन्होंने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नार दिया और जनता को 'करो या मरो' का संदेश दिया। महात्मा गांधी के जीवन में भारत की अहिंसक परंपरा का विकास दिखायी देता है। उन्होंने सत्य और अहिंसा को व्यापक धरातल पर स्थापित किया। जैसे-जैसे गांधीजी राजनीति से दूर जाएंगे, उनका आध्यात्मिक पक्ष अधिक उजागर होगा। उनके विचारों की चमक दिनोंदिन बढ़ती जाएगी। दुनिया भारत की ओर आशाभरी नजरों से देख रही है। हम असुरक्षा के भय से दुर्भाग्यवश हथियारों की अंधी दौड़ में शामिल हो गए हैं।

गांधीजी का विचार है कि भारत पशुबल का आधार लेगा तो समाप्त हो जाएगा। भारत की मूल शक्ति विचारपूर्वक हृदय परिवर्तन में निहित है। यहां जितने मतमतांतरों को फलने-फूलने का मौका मिला है उसके मूल में विचार ही है। हिंसा के आधार से विचार परिवर्तन पर भारत का कभी विश्वास नहीं रहा। अज्ञानता की जंजीरों में जकड़े हुए देशवासियों को अस्त्रशस्त्रों से नहीं बल्कि विचार से ही मुक्त किया जा सकता है। इसे महात्मा गांधी ने गहराई से महसूस किया। एक वैज्ञानिक की भांति वे जीवनभर प्रयोग करते रहे। अपने विचारों में संशोधन करने में उन्हें कभी हिचक महसूस नहीं हुई। उन्होंने अपने विचारों के बारे में स्वयं ही कहा है कि 'यदि मेरे पहले के विचार और बाद के विचार में कोई अंतर दिखाई दे तो बाद वाले विचार को ही मान्य किया जाए।' गांधी विचार नित्य विकसनशील है। एकादश व्रत किसी एक व्यक्ति अथवा देश की संपत्ति नहीं हैं। इसे अपनाकर कोई भी गांधी मार्ग पर चलने का दावा कर सकता है।